PUNE RESEARCH TIMES ISSN 2456-0960
AN INTERNATIONAL JOURNAL OF CONTEMPORARY STUDIES VOL 3, ISSUE 3

'प्रेमचंद की कहानियों में कठोर सामाजिक यथार्थ'

डॉ. भरत पटेल

हिन्दी विभाग

विजयनगर आर्ट्स कॉलेज

गुजरात भारत

प्रेमचंद हिन्दी के युग-प्रवर्तक साहित्यकार हैं | विपुल और श्रेष्ठतम उपन्यास-कहानी साहित्य लिखने के कारण सन् १९१० से सन् १९३६ तक के समय को हिन्दी साहित्य में प्रेमचंद-युग के नाम से पहचाना जाता है | वे शुरुआत में नवाबराय के नाम से उर्दू में लिखते थे, परंतु 'सोजेवतन' कहानी-संग्रह अंग्रेजों द्वारा जब्त कर लेने के पश्चात वे प्रेमचंद के नाम से हिन्दी में लिखना शुरू करते हैं | उनकी आरंभिक कहानियों में घटना की प्रधानता पायी जाती है और ये यथार्थपरक चित्रण से शुरू होकर आदर्श स्थित में परिणित होती है | तत्पश्चात वे आदर्शवाद का मोह छोड़कर यथार्थ की सहज भूमि पर उतर आते हैं | 'कफन', 'सवा सेर गेहूँ', 'पूस की रात', 'सद्गति', 'ठाकुर का कुआँ' आदि यथार्थपरक कहानियाँ काफी लोकप्रिय हुई हैं, जिनमें समाज की कठोर वास्तविकता मार्मिकता के साथ अभिव्यक्त हुई है |

'कफन' प्रेमचंद की एक बहुत ही प्रसिद्ध और सामाजिक वैषम्य से प्रभावित संवेदनशून्य हो गए मनुष्यों की यथार्थपरक कहानी है | घीसू और माधव इसके प्रमुख पात्र हैं | घीसू साठ साल का अधेड़ है, जिसकी पत्नी कुछ वर्ष पहले मर चुकी है | उसके बेटे माधव की एक साल पहले बुधिया से शादी हुई थी | घीसू और माधव आलसी और आरामतलब थे | घीसू एक दिन काम करता तो तीन दिन आराम करता | माधव इतना कामचोर था कि आधा घण्टा काम करता तो घण्टे भर चिलम पीता | फाके की नौबत आने पर घीसू लकड़ियाँ तोड़ लाता और घीसू बाजार में बेच आता | जब तक कुछ पैसे या मुट्ठीभर अनाज होता, इधर-उधर मारे-मारे फिरते | मटर आलू की फसल में दूसरों के खेतों से मटर या आलू उखाड़ लाते और

भून-भूनकर खाते या ऊख उखाड़ लाते और चूसते | परन्तु जब से बुधिया घर में आई, घर में व्यवस्था की नींव डाली | पिसाई करके या घास छीलकर वह सेर भर आटे का इंतजाम करती और इन दोनों का पेट भरती | आज वह प्रसव-वेदना से तड़प रही है, पछाड़े खा रही है | झोंपड़े के बाहर अलाव के सामने बैठकर दोनों आलू भूनकर खा रहे है | शायद दोनों इस इन्तजार में थे कि वह मर जाय, तो आराम से सोएँ | बाप-बेटे का निम्नांकित संवाद उनकी संवेदनहीनता का परिचायक है -

"घीसू ने कहा - 'मालूम होता है, बचेगी नहीं | सारा दिन दौड़ते हो गया , जा देख तो आ |'

माधव चिढ़कर बोला - 'मरना ही है तो जल्दी मर क्यों नहीं जाती | देखकर क्या करूँ ?'

'तू बड़ा बेदर्द है बे ! साल भर जिसके साथ सुख-चैन से रहा, उसी के साथ इतनी बेवफाई!'" [१]

घीसू माधव को भीतर जाकर देखने को कहता है, पर माधव को डर था कि वह भीतर गया तो घीसू आलुओं का बड़ा भाग साफ कर देगा | अत: वह बहाना बनाता है | घीसू और माधव के आलसी और संवेदनशून्य हो जाने का कारण बताते हुए प्रेमचंद जी लिखते हैं - 'जिस समाज में रात-दिन मेहनत करनेवालों की हालत उसकी हालत से कुछ बहुत अच्छी न थी और किसानों के मुक़ाबले में वे लोग, जो किसानों की दुर्बलताओं से लाभ उठाना जानते थे, वे कहीं ज्यादा सम्पन्न थे, वहाँ इस तरह की मनोवृत्ति का पैदा हो जाना कोई अचरज की बात न थी |' [२]

आलू छिलकर खाते समय घीसू को ठाकुर की बारात याद आती है, जिसमें वह बीस साल पहले गया था | उस दिन के स्वादिष्ट भोजन की बात सुनकर माधव कल्पना-सुख प्राप्त करता है | बातें करते-करते दोनों वहीं सो जाते है | सुबह देखते है तो बुधिया मरी हुई पड़ी थी | उसके पेट में बच्चा मर गया था | दोनों रोते चिल्लाते जमींदार के पास पहुँचते हैं और अंतिम-संस्कार के लिए कुछ पैसे माँगते हैं | ठाकुर दयालु थे, पर यह भी जानते थे कि उन पर दया करना काले कम्बल पर रंग चढ़ाने जैसा था | फिर भी दो रुपये फेंक देते है | वे व्यापारी -महाजनों से भी रुपये माँगते हैं | अंतत: उनके पास पाँच रुपये की बड़ी रकम जमा हो गई | लकड़ी का इंतजाम हो गया था | दोनों कफन लेने चलते हैं | कई दुकानों पर जाकर

सूती और रेशमी कफन देखते हैं, पर खरीदते नहीं | घीसू और माधव का यह संवाद दृष्टव्य है -

'कैसा बुरा रिवाज है, जिसे जीते जी तन ढांकने को चिथड़े भी न मिले उसे मरने पर नया कफन चाहिए |'

'कफन लाश के साथ जल ही तो जाता है ?'

'और क्या रखा रहता है ? यहीं पाँच रुपये पहले मिलते तो कुछ दवा-दारू कर लेते |' [३]

लेखक ने इस संवाद के माध्यम से सामाजिक वैषम्य, जिंदा मनुष्य की उपेक्षा और मृत आदमी को सम्मान देनेवाली विपरीत मानसिकता, खोखले रीति-रिवाजों पर तिलमिला देनेवाला कटु व्यंग्य किया है | फिर दोनों किसी दैवी प्रेरणा से परिचालित शराब की दुकान पर पहुँच जाते हैं | पूरी बोतल शराब, चिखौना, तली हुई मछलियाँ, पूरियाँ, चटनी और कलेजियाँ आदि सामान लेकर बैठते हैं | भरपेट खाते हैं और जी भर के शराब पीते हैं | बुधिया को आशीर्वाद देते हैं - 'बड़ी अच्छी थी बेचारी ! मरी तो खूब खिला-पिलाकर | ... हमारी आत्मा प्रसन्न हो रही है तो क्या उसे पुन्न न होगा ? ... जरूर-से-जरूर होगा | भगवान तुम अंतरयामी हो | उसे वैकुंठ ले जाना |' बचा हुआ खाना भिखारी को देते हुए घीसू कहता है - 'ले जा खूब खा और आशीर्वाद दे | जिसकी कमाई थी वह तो मर गई | मगर तेरा आशीर्वाद उसे जरूर पहुँचेगा | रोये-रोये से आशीर्वाद दे, बड़ी गाढ़ी कमाई के पैसे हैं |' [४] आखिर नशे मस्त होकर गाते हुए वहीं ढेर हो जाते हैं |

'सवा सेर गेहूँ' प्रेमचंद की एक यथार्थपरक कहानी है | इसमें महाजनों द्वारा किसानों के शोषण की कथा-व्यथा का वास्तविक चित्रण हुआ है | शंकर नाम का सीधा-सादा कुरमी किसान खेती करके अपने परिवार का निर्वाह करता था | न किसी का लेना, न किसी को देना | छल-प्रपंच से कोसों दूर रहता, जो मिलता खाकर मेहनत करता, राम का नाम लेकर सो रहता | द्वार पर कोई साधु-महात्मा आते तो भक्ति-भाव से आदर-सत्कार करता |

एक दिन संध्या समय एक महात्मा ने शंकर के द्वार पर डेरा जमाया | घर में जौ के सिवा कोई धान्य नहीं था | महात्मा को वह जौ की रोटी कैसे खिलाता | वह गाँव के किसानों के पास गेहूँ उधार माँगने गया, पर कहीं से न मिला | अंत में वह ब्राह्मण के घर जाता है और सवा सेर गेहूँ उधार माँग लाता है | वह महात्मा को गेहूँ की रोटी खिलाता है | साधु सवेरे आशीर्वाद देकर चलते बने | ब्राह्मण पण्डित वर्ष में दो बार खलिहानी लिया करते थे | शंकर ने सोचा, पण्डित जी को सवा सेर गेहूँ क्या लौटाऊँ | इसलिए वह हर बार पंसेरी से ज्यादा अनाज देने लगा | सात वर्ष बाद पंडितजी ने एक दिन शंकर को टोककर हिसाब कर जाने को कहा | वह तो सोच में पड़ गया, बोला - महाराज मैंने कब कर्ज लिया है ? तब पण्डित जी ने सवा सेर गेहूँ वाली बात याद दिलाई | उसने कहा - पर मैं तो हर बार पंसेरी से ज्यादा अनाज देता रहा हूँ | पण्डित जी ने कहा - वह तो दक्षिणा थी और वह बही में थोड़ी ही दर्ज होती है | अंतत: शंकर को साढ़े पाँच मन गेहूँ देने की बात हुई | उसका बाजार-भाव ६० / रुपये हुए और न चुकाने पर दस्तावेज़ करवा दिया | छोटा भाई मंगल अलग हो गया | आधी खेती और तन तोड़ मजदूरी करके आधा भूखा रहकर उसने साठ रुपये बचाए | पण्डित के पास गया तो ब्याज तथा स्टाम्प और तहरीर के पंद्रह रुपये और बाकी निकले | शंकर और विप्र का यह संवाद दृष्टव्य है -

“शंकर - महाराज, इतनी दया करो, अब साँझ की रोटियों का भी ठिकाना नहीं है, गाँव में हूँ तो कभी-न-कभी दे ही दूँगा |

विप्र - मैं यह रोग नहीं पालता, न बहुत बातें करना जानता हूँ | अगर पूरे रुपये न मिलेंगें तो आज से ३ / सैंकड़े का ब्याज लगेगा | अपने रुपये चाहे अपने घर में रखो, चाहे मेरे यहाँ छोड़ जाओ | ” [५] पूरे रुपये न देने पर पूरी रकम पर ब्याज बढ़ता गया | तीन साल बाद हिसाब हुआ तो अब भी १२० रुपये बाकी निकले | अंतत: शंकर को बंधुआ मजदूर बना दिया गया, रोज का आधा सेर जौ और साल में एक कम्बल देकर | मजदूरी ब्याज के रूप में जमा होती रहेगी | इस प्रकार बीस वर्ष तक गुलामी करने पर भी १२० / बाकी ही रहे | शंकर के मर जाने के बार उसके जवान बेटे को गुलाम बना दिया गया | कहानी के अंत में प्रेमचंद जी ने लिखा है - ‘पाठक ! इस वृत्तांत को कपोल-कल्पित न समझिए | यह सत्य घटना है | ऐसे शंकरों और ऐसे विप्रों से दुनिया खाली नहीं है |’ [६]

किसान को जगत का तात कहा जाता है, क्योंकि वह खेतों में तन-तोड़ मेहनत करके अनाज पैदा करता है जिस पर अन्य लोग निर्भर रहते हैं | लेकिन भारत का किसान प्रारब्धवादी है | दिन-रात पसीना बहाने पर भी नसीब अच्छा हो तभी दो जून की रोटी नसीब होती है | आजादी से पूर्व तो किसान की हालत और भी दयनीय थी | खेतों में दिन-रात हड्डियाँ तोड़कर और रखवाली करने पर जो फसल तैयार होती है, उसे महाजन और लेनदार हड़प कर लेते हैं | विवशता में किसी महाजन से एक बार उधार या कर्ज लेते हैं तो वह ज़िंदगी भर चुकता नहीं होता | 'पूस की रात' कहानी में किसानों की कड़ी मेहनत, विवशता, शोषण, अभावग्रस्त जिंदगी और अनंत मुसीबतों की यथार्थ अभिव्यक्ति हुई है |

हल्कू नामक किसान ने दिन-रात मेहनत और पेट काटकर तीन रुपये बचाए थे | पूस की रात में खेत की रखवाली करते वक्त हाड़ कंपा देनेवाली ठण्ड से बचने के लिए उसे एक कम्बल लेना था | पर सोहना के तकाजे पर वह अपनी पत्नी मुन्नी को समझाकर उससे तीन रुपये लेकर सोहना को देना चाहता है | तब मुन्नी कहती है - 'तीन ही रुपये तो है, दे दोगे तो कम्बल कहाँ से लाओगे ? माघ-पूस की रात हार में कैसे कटेगी ?' वह कहता है - 'ला दे, गला तो छूटे | कम्बल के लिए कोई दूसरा उपाय सोचेंगे |' तब मुन्नी आँखें तरेरती हुई कहती है - " सोच चुके दूसरा उपाय ! जरा सुनूँ कौन उपाय करोगे ? कोई खैरात दे देगा क्या ? न जाने कितनी बाकी है जो किसी तरह चुकाने नहीं आती | मैं कहती हूँ तुम क्यों नहीं खेती छोड़ देते ? मर-मर काम करो, उपज हो तो बाकी दो, चलो छुट्टी हुई | बाकी चुकाने के लिए ही तो हमारा जनम हुआ ? " [७]

सोहना की गाली से बचने के लिए आखिर उसे तीन रुपये दे दिये जाते हैं | पूस की रात में हल्कू खेत की रखवाली करने जाता है साथ में उसका कुत्ता जबरा भी है | हाड़ कंपा देनेवाली ठंड में दोनों परेशान हैं | हल्कू कई बार चिलम पीकर शरीर को गरम करने की चेष्टा करता है | आधी रात तो कट जाती है, पर अब रहना मुश्किल होता जा रहा था | हल्कू उपले में आग लेकर अपने खेत से एक गोली दूर पर आए आम के बगीचे में पहुँचता है | सुखी पत्तियों और डंठलों को इकट्ठा करके आग जलाता है | दोनों अपने शरीर को गर्म करते हैं | आग बुझने को होती है, तब वे वहीं सो जाते हैं | कुछ समय बाद जानवरों की आहट पाकर जबरा भौंकने लगता है | हल्कू जाग तो जाता है, पर उसमें आलस्य भाव आ जाता है

| वह सोचता है इतनी ठण्ड में नंगे पाँव कौन रोज के झुंड के पीछे दौड़ता है ! वह रोज के झुण्ड द्वारा अपनी फसल चबाने की आवाज सुनता है, फिर भी सो जाता है | सवेरे मुन्नी आकर उसे जगाती है | दोनों देखते हैं फसल का सत्यानाश हो चुका था | मुन्नी ने चिन्तित होकर कहा - 'अब मजूरी करके मालगुजारी भरनी पड़ेगी |' हल्कू ने प्रसन्न मुख से कहा - 'रात की ठंडी में यहाँ सोना तो न पड़ेगा |' शायद हल्कू ने सोचा होगा कि फसल तैयार होती तो भी उसके पास कहाँ रहनेवाली थी ! बाकी चुकाने में ही जाती ! तो फिर कौन ठण्ड में मरे ! मजूरी करने पर कम-से-कम सुख की रोटी तो खा पाएगा | इन भयावह स्थितियों में भारत के कई किसान खेती छोड़कर मजदूर बनते गए, बनते जा रहे हैं |

'सद्गति' दलित-जीवन की दशा-व्यथा की दारुण कथा है | इस कहानी में स्वतन्त्रता-पूर्व के भारतीय समाज में व्याप्त जातिगत भेदभाव, छूआछूत, धार्मिक पाखण्ड, धर्म के नाम पर गरीब और निम्न जातियों का शोषण आदि विसंगतियों का यथार्थ और मार्मिक चित्रण हुआ है | इसका प्रमुख पात्र है - दुखी चमार | वह अपनी बेटी की सगाई का मुहूर्त निकालने के लिए पण्डित घासीराम को अपने घर बुलाना चाहता है | इसलिए वह द्वार पर झाड़ू लगाता है और उसकी पत्नी झुरिया घरको गोबर से लींप देती है | दोनों सोचते हैं कि पण्डित बाबा किस पर बैठेंगे ? झुरिया ठकुराने से खटिया माँग लाने की सलाह देती है | तब दुखी कहता है कि ठकुराने से माँगने पर आग तक नहीं मिलती, वे हमें खटिया थोड़े ही देंगे | फिर अपनी ही खटिया को धोकर काम चलाने कि बात होती है, तब झुरिया कहती है - 'वह हमारी खटोली पर बैठेंगे नहीं | देखते नहीं कितने नेम-धरम से रहते हैं |' अंतत: महुए के पत्तों की पत्तल बनाने का निर्णय होता है | फिर सीधा देने की बात निकलती है | दुखी अपनी पत्नी से कहता है कि झुरी गोंड की लड़की को लेकर साह की दुकान पर जाना और पत्तल में सेर भर आटा, आधे सेर चावल, पाव भर दाल, आधे पाव घी, नोन, हल्दी और पत्तल में एक किनारे चार आने रख देना | तू इन चीजों को बिलकुल मत छूना | इतनी सूचना देकर वह घास का भारी गट्ठर लेकर पण्डित जी के घर पहुँचता है |

पूजा-पाठ से निवृत्त होकर पण्डित घासीराम जब बाहर निकले तो देखा दुखी चमार घास का गट्ठर लिए बैठा है | दुखी इन्हें देखते ही उठ खड़ा हुआ और साष्टांग दंडवत करके हाथ बाँधकर खड़ा हो गया | पण्डित जी अपने श्रीमुख से बोले - आज कैसे चला रे दुखिया ?

दुखी ने सिर झुकाकर कहा - 'बिटिया की सगाई कर रहा हूँ महाराज | कुछ साइत-सगुण विचारना है | कब मर्जी होगी ?' पण्डित शाम को आने का कहकर दुखी से कई सारे काम करवा लेना चाहता है | जैसे - गाय को घास डालना, झाड़ू से द्वार साफ करना, बैठक की गोबर से लीपाई करना, खलिहान से भूसा लाकर भुसौली में रखना और लकड़ी चीरना | दुखी हुक्म की तामील करने लगा | बाकी सारे काम निपटाए तब बारह बज गए थे | उसने सुबह से कुछ नहीं खाया था | उसका घर मील भर दूर था | अत: वह भूख को दबाकर लकड़ी चीरने लगा | गाँठ वाली लकड़ी पर दरार तक नहीं पड़ती थी | उसे चिलम पीने की तलब लगी | वह चिखुरी गोंड के घर जाकर तम्बाकू और चिलम ले आया, पर आग न मिली | पण्डित जी के द्वार पर जाकर उसने आग माँगी | पंडिताइन क्रोधित हो जाती है और पण्डित से कहती है - '

" तुम्हें तो जैसे पोथी-पत्रों के फेर में धरम-करम किसी बात की सुधि ही नहीं रही | चमार हो, धोबी हो, पासी हो, मुँह उठाये घर में चला आए | हिन्दू का घर न हुआ, कोई सराय हुई | कह दो दाढ़ीजार से चला जाय, नहीं तो इस लुआठे से मुँह झुलस दूँगी | " [4] फिर भी पण्डित के कहने पर दूर से आग फेंकती है, जिसकी बड़ी चिनगारी दुखी के सिर पर पड़ती है | वह समझता है ब्राह्मण के घर को अपवित्र करने की सजा भगवान ने दे दी | वह फिर कुल्हाड़ी से लकड़ी पर प्रहार करने लगता है | वह थक जाता है, पर लकड़ी ज्यों की त्यों पड़ी थी | भूखा दुखी पेट दबाकर वही सो गया | थोड़ी देर बाद पण्डित जी बाहर निकले | दुखी को सोया हुआ देखकर गुस्सा हो गए और उसे लकड़ी चीरने के लिए उकसाने लगे | दुखी ने कुल्हाड़ी उठाई और वार पर वार करता जाता है | आधे घण्टे तक वह उन्माद की दशा में कुल्हाड़ी चलता रहा | लकड़ी बीच से फट गई, पर साथ ही उसका शरीर जवाब दे गया | घासीराम पंडिताई बाना पहनकर बाहर निकलते है | जमीन पर पड़े दुखी के पास जाकर देखते है तो दुखी मरा हुआ पड़ा था |

चिखुरी गोंड चमारों को पुलिस की तहक़ीक़ात का डर दिखाता है | अत: पण्डित के बुलाने पर भी कोई चमार लाश उठाने नहीं जाता | रात भर लाश वहीं पड़ी रही और दुर्गंध फैलने लगी | अंतत: सुबह के धुँधलके में पण्डित ने रस्सी का फंदा पैर में डालकर कस लिया

और दुखी की लाश को मरे हुए कुत्ते की भाँति घसीटते हुए गाँव के बाहर फेंक आए | 'सद्गति' जैसा अर्थपूर्ण शीर्षक देकर लेखक ने बड़ा मार्मिक व्यंग्य किया है |

'ठाकुर का कुआँ' समाज में व्याप्त जातिगत भेद-भाव, झूठे पाखण्ड, छुआछूत जैसी समस्याओं को लेकर लिखी गई यथार्थपरक कहानी है | उस जमाने में गाँव में दो-तीन ही कुएँ हुआ करते थे, जिनमें से उच्च जाति की स्त्रियाँ ही पानी भर सकती थी |निम्न और अस्पृश्य समझी जानेवाली चमार, भंगी जैसी जाति की स्त्रियों को बहुत दूर से पानी भरकर लाना पड़ता था | ठाकुर और ब्राह्मण आदि ऊँची जाति के लोग उन अछूतों का शोषण करते थे, उनकी स्त्रियों पर बलात्कार करते थे, उनका खून चूसते थे, पर अपने कुएँ से उन्हें पानी नहीं भरने देते |

जोखू कई दिनों से बीमार था | प्यास लगने पर वह लोटा उठाकर मुँह के पास ले जाता है तो पानी से भयंकर बदबू आ रही थी | वह अपनी पत्नी गंगी से पूछता है - यह कैसा पानी है ? मारे बास के पिया नहीं जाता | गंगी देखती है तो सचमुच पानी से बदबू आ रही थी | वह कहती है, कुएँ में कोई जानवर गिरकर मर गया होगा | ठहरो मैं दूसरा पानी ले आती हूँ | तब जोखू कहता है - '

" हाथ-पाँव तुड़वा आएगी | और कुछ न होगा | बैठ चुपके से | ब्रह्म देवता आशीर्वाद देंगे, ठाकुर लाठी मारेंगे, साहू जी एक के पाँच लेंगे | गरीबों का दर्द कौन समझता है ? हम तो मर भी जाए तो कोई दुआर पर झाँकने नहीं आता है | कंधा देना तो बड़ी बात है | ऐसे लोग कुएँ से पानी भरने देंगे ? " [९] जोखू के इस कथन से समाज में व्याप्त जातिगत भेदभाव, छूआछूत, निम्न जातियों का शोषण आदि विसंगतियाँ बेनकाब हो जाती हैं | गंगी चोरी-छुपी ठाकुर के कुएँ से पानी भरने जाती है | सबके सो जाने पर वह रस्सी से बंधा घड़ा बिना आवाज किए कुएँ में डालती है | पानी भरा हुआ घड़ा ऊपर आ गया था | गंगी उसे पकड़ने वाली ही थी कि अचानक ठाकुर दरवाजा खोलकर बाहर आता है | भय के मारे रस्सी हाथ से छूट जाती है | पानी भरा हुआ घड़ा ऊपर से नीचे गिरता है तो धमाका होता है | ठाकुर - कौन है ? कौन है ? पूछता हुआ कुएँ की तरफ आ रहा था | गंगी सबकुछ छोड़कर भाग जाती है | घर आकर देखती है तो जोखू वही मैला-गंदला पानी पी रहा था |

इस प्रकार प्रेमचंदजी ने अपनी कहानियों में किसानों की दुर्दशा, ब्राह्मण-साहूकारों द्वारा उनका शोषण, वर्ण-व्यवस्था की कठोरता से संत्रस्त लोगों की पीड़ा और सर्वहारा जनों की व्यथा को मार्मिक अभिव्यक्ति दी है |

संदर्भ सूची :

१. कफन, प्रेमचन्द की इक्यावन श्रेष्ठ कहानियाँ, पृष्ठ - ३२०
२. वही, पृष्ठ - ३२१
३. वही, पृष्ठ - ३२४
४. वही, पृष्ठ - ३२६
५. सवा सेर गेहूँ, प्रेमचन्द की इक्यावन श्रेष्ठ कहानियाँ, पृष्ठ - ३५
६. वही, पृष्ठ - ३७
७. पूस की रात, प्रेमचन्द की इक्यावन श्रेष्ठ कहानियाँ, पृष्ठ - १२६
८. सद्गति, प्रेमचन्द की इक्यावन श्रेष्ठ कहानियाँ, पृष्ठ - ८९
९. ठाकुर का कुआँ, प्रेमचन्द की इक्यावन श्रेष्ठ कहानियाँ, पृष्ठ - १६३